बोध

प्रेमचन्द

लेखक परिचय :

प्रेमचन्द का जन्म उत्तर प्रदेश के बनारस के पास लमही नामक गाँव में 31 जुलाई, सन् 1880 को एक कायस्थ परिवार में हुआ था। प्रेमचन्द के बचपन का नाम धनपतराय था। उनके पिता अजायब लाल डाक-मुंशी थे। जब प्रेमचन्द सात साल के थे, माता चल बसीं और चौदह की उम्र में पिता भी चल बसे। प्रेमचन्द ने ट्यूसन करके परिवार चलाया। आरम्भ में उन्होंने उर्दू-फारसी की शिक्षा पायी। फिर मैट्रिक परीक्षा पास की। स्कूल में बीस रुपये वेतन में अध्यापक बन गये। आगे उन्होंने बी.ए. पास किया। कुछ दिन स्कूल में अध्यापक रहने के बाद सन् 1921 ईस्वी में प्रेमचन्द गोरखपुर में स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर बन गये। उन दिनों महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग ओन्दालन चलाया जा रहा था। प्रेमचन्द इससे बड़े प्रभावित हुए, फिर नौकरी से उन्होंने इस्तीफा दे दी।

सन् 1901 के लगभग प्रेमचन्द ने पहले कहानियों को लिखना शुरू किया। 5-6 साल बाद उन्होंने उपन्यास लिखे। वे पहले उर्दू में लिखा करते थे, फिर हिन्दी में लिखा। उनकी कहानियाँ उर्दू पत्रिका 'जमाना' में छपती थीं। प्रेमचन्द ने लगभग ढाई सौ से ज्यादा कहानियाँ लिखीं, बारह उपन्यास लिखे और कुछ निबंध भी। प्रेमचन्द 'मर्यादा' और 'माधुरी' पत्रिका का संपादन किया करते थे। फिर उन्होंने बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की एवं 'हंस' मासिक तथा 'जागरण' साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया। सन् 1934-35 में उन्होंने बम्बई (मुम्बाई) की फिल्म दुनिया में काम किया। पर ज्यादातर उनका समय बनारस और लखनऊ में बीता।

प्रेमचन्द की समस्त कहानियाँ 'मानसरोवर' में संकलित की गयी हैं। हिन्दी कहानी-साहित्य में प्रेमचन्द ने सबसे पहले कल्पना के बदले मानव-जीवन को विषय बनाया। आम आदमी के दुःख-दर्द का वर्णन किया। अतः उनकी कहानियों में किसान-मजदूर की गरीब जिन्दगी के साथ मेहनती आदमी का चित्र मिलता है। नारी-जीवन की विड़म्बना को उन्होंने सहानुभूति के साथ दिखाया। उनकी रचनाओं में शोषित, दलित, दुःखी नर-नारियों के साथ पशु-पक्षियों के प्रति भी आत्मीयता तथा संवेदनशीलता मिलती है।

प्रेमचन्द की भाषा-शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी बोलचाल की भाषा है। इसमें सरल उर्दू-संस्कृत शब्दों के साथ देहाती लब्ज (शब्द) भी हैं। इसलिए भाषा बड़ी मजेदार और सजीव है।

प्रेमचन्द की रचनाएँ हैं :- कहानी-संग्रह : मान सरोवर (आठ भाग), उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगल-सूत्र (अपूर्ण) आदि । निबंध-संग्रह : कुछ विचार, प्रेमचन्द : विविध प्रसंग । नाटक : संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी ।

विचार-बोध :

कुशल कहानीकार प्रेमचन्द की यह एक मार्मिक कहानी है । लोग जीवन में धन कमाने, प्रतिष्ठा पाने, धाक जमाने में लगे रहते हैं । इसीमें अन्याय, अत्याचार, करते रहते हैं । पर वे भूल जाते हैं कि जैसे बोओगे वैसे काटोगे ।

कहानी में तीन पात्र हैं– एक गरीब मास्टर हैं, दूसरे अमीर मुंशी हैं और तीसरे पुलिस के सिपाही । पण्डित चन्द्रधर को स्वल्प वेतन मिलता था, न बाहर की कोई आमदनी और न पदोन्नति । जिन्दगी भर बच्चों को पढ़ाते रहे, बच्चों को प्यार किया, आदमी बनाया । मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह ने अपनी पदवी और जीविका का नाजायज फायदा उठाया, खूब धन कमाया और वे लोग ऐशो-आराम से रहे । उनमें स्नेह, दया आदि मानवीय भाव नहीं थे । कठोर आचरण था । इसका क्या परिणाम हुआ ?

कहानी आगे बढ़ती है । एक बार तीनों अयोध्या की यात्रा में निकले । रेलगाड़ी के एक डिब्बे में घुसे । वहाँ चार आदमी लेट रहे थे । उनको बैठने को जगह नहीं दी । झगड़ने लगे । क्योंकि वे पहले मुंशी जी और जमादार के हाथों सताये गये थे । किसी तरह मुंशीजी, ठाकुरजी और पण्डित चन्द्रधर अयोध्या तो पहुँचे, पर कहीं रुकनेकी जगह नहीं मिली । इतनेमें पण्डितजी के एक शिष्य कृपाशंकर मिल गये । उन्होंने अपने गुरु के पाँव छुए । सबको अपने घर ले गये, शानदार आतिथ्य किया । वह भी बड़ी खुशी से । कहा कि गुरुजी के कारण मैं आदमी बना हूँ । उनकी सेवा करके धन्य हुआ । सब लोग खुश हुए ।

पण्डितजी जिन्दगी भर गरीबी में सड़ते रहे । इससे अपने भाग्य को कोसते रहते थे । लेकिन इस घटना से उनको बोध (ज्ञान) हुआ कि शिक्षकता महान् कर्म है । वे जिन्दगी भर का दुःख भूल गये । उन्हें अपने शिक्षक होने के महत्त्व का बोध हुआ । फिर कभी न उन्होंने अपने आपको कोसा और न शिक्षक का पद छोड़कर दूसरे विभाग में नौकरी करने की कोशिश की ।

बोध

पंडित चन्द्रधर ने एक अपर प्राइमरी में मुदर्रिसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछताया करते कि कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे । यदि किसी अन्य विभाग में नौकर होते तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता । यहाँ तो महीने भर प्रतीक्षा करने के पीछे कहीं पंद्रह रुपये देखने को मिलते हैं । यह भी इधर आये, उधर गायब ! न खाने का सुख, न पहनने का आराम । हमसे तो मजूर ही भले ।

पंडित जी के पड़ोस में दो महाशय और रहते थे । एक ठाकुर अतिबल सिंह, वह थाने में हेड कान्सटेबुल थे । दूसरे मुंशी बैजनाथ । वह तहसील में सियाहेनवीस थे । इन दोनों आदमियों का वेतन पंडित से कुछ अधिक न था, तब भी उनकी चैन से गुजरती थी । संध्या को वह कचहरी से आते, बच्चों को पैसे और मिठाइयाँ देते । दोनों आदमियों के पास टहलते थे । घर में कुरसियाँ, मेजें, फर्श आदि सामग्रियाँ मौजूद थीं । ठाकुर साहब शाम को आराम कुरसी पर लेट जाते और खुशबूदार खमीरा पीते । मुंशीजी को शराब-कबाब का व्यसन था । अपने सुसज्जित कमरे में बैठे हुए बोतल की बोतल साफ कर देते । जब कुछ नशा होता तो हारमोनियम बजाते । सारे मुहल्ले में उनका रोबदाब था । उन दोनों महाशयों को आते-जाते देख कर बनिये उठकर सलाम करते । उनके लिए बाजार में अलग भाव था । चार पैसे की चीज टके में लाते । लकड़ी-ईंधन मुफ्त में मिलता । पंडित जी उनके ठाट-बाट को देखकर कुढ़ते और अपने भाग्य को कोसते । वह लोग इतना भी न जानते थे कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है अथवा सूर्य पृथ्वी का । साधारण पहाड़ों का भी ज्ञान न था, जिस पर भी ईश्वर ने उन्हें इतनी प्रभुता दे रखी थी । यह लोग पंडित जी पर बड़ी कृपा रखते थे । कभी सेर आध, सेर दूध भेज देते और कभी थोड़ी-सी तरकारियाँ । किन्तु इनके बदले में पंडित जी को ठाकुर साहब के दो और मुंशीजी के तीन लड़कों की निगरानी करनी पड़ती । ठाकुर साहब कहते, पंडित जी ! यह लड़के हर घड़ी खेला करते हैं, जरा इनकी खबर लेते रहिए । मुंशीजी कहते, यह लड़के आवारा हुए जाते हैं, जरा इनका ख्याल रखिए । यह बातें बड़ी अनुग्रहपूर्ण रीति से कही जाती थीं मानो पंडित जी उनके गुलाम हैं । पंडित जी को यह व्यवहार असह्य था, किंतु इन लोगों को नाराज करने का साहस न कर सकते थे, उनकी बदौलत कभी-कभी दूध-दही के दर्शन हो जाते, कभी आचार-चटनी चख लेते । केवल इतना ही नहीं, बाजार से चीजें भी सस्ती लाते । इसलिए बेचारे इस अनीति को विष के घूँट के

समान पीते । इस दुरवस्था से निकलने के लिए उन्होंने बड़े-बड़े यत्न किये थे । प्रार्थना-पत्र लिखे, अफसरों की खुशामदें कीं, पर आशा पूरी न हुई । अंत में हार कर बैठ रहे । हाँ, इतना था कि अपने काम में त्रुटि न होने देते । ठीक समय पर जाते, देर करके आते, मन लगाकर पढ़ाते । इससे उनके अफसर लोग खुश थे । साल में कुछ इनाम देते और वेतन-वृद्धि का जब कभी अवसर आता, उसका विशेष ध्यान रखते । परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है । बड़े भाग से हाथ लगती है । बस्ती के लोग उनसे संतुष्ट थे । लड़कों की संख्या बढ़ गयी थी और पाठशाला के लड़के भी उन पर जान देते थे । कोई उनके घर आकर पानी भर देता, कोई उनकी बकरी के लिए पत्तियाँ तोड़ लाता । पंडित जी इसी को बहुत समझते थे ।

एक बार सावन के महीने में मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह ने श्री अयोध्या जी की यात्रा की सलाह की । दूर की यात्रा थी । हफ्तों पहले से तैयारियाँ होने लगीं । बरसात के दिन, सपरिवार जाने में अड़चन थी, किंतु स्त्रियाँ किसी भाँति भी न मानती थीं । अंत में विवश होकर दोनों महाशयों ने एक-एक सप्ताह की छुट्टी ली और अयोध्या जी चले । पंडित जी को भी साथ चलने के लिए बाध्य किया । मेले-ठेले में एक फालतू आदमी से बड़े काम निकलते हैं । पंडित जी असमंजस में पड़े, परन्तु जब उन लोगों ने उनका व्यय देना स्वीकार किया तो इन्कार न कर सके और अयोध्या जी की यात्रा का ऐसा सुअवसर पाकर न रुक सके ।

बिल्हौर से एक बजे रात गाड़ी छूटती थी । यह लोग खा-पीकर स्टेशन पर आ बैठे । जिस समय गाड़ी आयी, चारों ओर भगदड़-सी पड़ गयी– हजारों यात्री जा रहे थे । उस उतावली में मुंशीजी पहले निकल गये । पंडित जी और ठाकुर साहब साथ थे । एक कमरे में बैठे । इस आफत में कौन किसका रास्ता देखता ।

गाड़ी में जगह की बड़ी कमी थी, परन्तु जिस कमरे में ठाकुर साहब थे उसमें केवल चार मनुष्य थे । वह सब लेटे हुए थे । ठाकुर साहब चाहते थे कि वह उठ जायें तो जगह निकल आये । उन्होंने एक मनुष्य से डाँटकर कहा– उठ बैठो जी, देखते नहीं हम लोग खड़े हैं ।

मुसाफिर लेटे-लेटे बोला– क्यों उठ बैठें जी ? कुछ तुम्हारे बैठने का ठेका लिया है ?

ठाकुर– क्या हमने किराया नहीं दिया है ?

मुसाफिर– जिसे किराया दिया हो, उससे जाकर जगह माँगो ।

ठाकुर– जरा होश की बातें करो । इस डब्बे में दस यात्रियों के बैठने की आज्ञा है ।

मुसाफिर– यह थाना नहीं है, जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिए ।

ठाकुर– तुम कौन हो जी ?

मुसाफिर– हम वही हैं जिस पर आपने खुफिया फरोसी का अपराध लगाया था और जिसके द्वार से आप नकद २५ रु. लेकर टले थे ।

ठाकुर– अहा ! अब पहचाना । परन्तु मैंने तो तुम्हारे साथ रियायत की थी । चालान कर देता तो तुम सजा पा जाते ।

मुसाफिर– और मैंने भी तो तुम्हारे साथ रियायत की कि गाड़ी नें खड़ा रहने दिया । ढकेल देता तो तुम नीचे जाते और तुम्हारी हड्डी-पसली का पता न लगता ।

इतने में दूसरा लेटा हुआ यात्री जोर से ठट्ठा मार कर हँसा और बोला– और क्यों दरोगा साहब, मुझे क्यों नहीं उठाते ?

ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे । सोचते थे अगर थाने में होता तो इसकी जबान खींच लेता, पर इस समय बुरे फँसे थे । वह बलवान मनुष्य थे, पर यह दोनों मनुष्य भी हट्टे-कट्टे दिख पड़ते थे ।

ठाकुर– सन्दूक नीचे रख दो, बस जगह हो जाय ।

दूसरा मुसाफिर बोला– और आप ही क्यों न नीचे बैठ जायँ । इसमें कौन-सी हेठी हुई जाती है । यह थाना थोड़े ही है कि आपके रोब में फर्क पड़ जायेगा ।

ठाकुर साहब ने उसकी ओर भी ध्यान से देखकर पूछा– क्या तुम्हें भी मुझसे कोई वैर है ?

'जी हाँ, मैं तो आपके खून का प्यासा हूँ' ।

'मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, तुम्हारी तो सूरत भी नहीं देखी ।'

दू० मु० –आपने मेरी सूरत न देखी होगी, पर आपके डंडे ने देखी है । इसी कल के मेले में आपने मुझे कई डंडे लगाये । मैं चुपचाप तमाशा देखता था, पर आपने आकर मेरा कचूमर निकाल लिया । मैं चुप रह गया, घाव दिल पर लगा हुआ है । आज उसकी दवा मिलेगी ।

यह कहकर उसने और भी पाँव फैला दिया और क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखने लगा । पंडित जी अब तक चुपचाप खड़े थे । डरते थे कि कहीं मार-पीट न हो जाय । अवसर पाकर ठाकुर साहब को समझाया । ज्योंही तीसरा स्टेशन आया, ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को वहाँ से निकाल कर दूसरे कमरे में बैठाया । इन दोनों दुष्टों ने उनका असबाब उठा-उठा कर जमीन पर फेंक दिया । जब ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे तो उन्होंने उनको ऐसा धक्का दिया कि बेचारे प्लेटफार्म पर गिर पड़े । गार्ड से कहने दौड़े थे कि इंजिन ने सीटी दी, जाकर गाड़ी में बैठ गये ।

उधर मुंशी बैजनाथ की और भी बुरी दशा थी । सारी रात जागते गुजारी । जरा पैर फैलाने की जगह न थी । आज उन्होंने जेब में बोतल भरकर रख ली थी । प्रत्येक स्टेशन पर कोयला-पानी ले लेते थे । फल यह हुआ कि पाचन-क्रिया में विघ्न पड़ गया । एक बार उल्टी हुई और पेट में मरोड़ होने लगी । बेचारे बड़ी मुश्किल में पड़े । चाहते थे कि किसी भाँति लेट जायँ, पर वहाँ पैर हिलाने की भी जगह न थी । लखनऊ तक तो उन्होंने किसी तरह जब्त किया । आगे चलकर विवश हो गये । एक स्टेशन पर उतर पड़े । प्लेटफार्म पर लेट गये । पत्नी भी घबरायी । बच्चों को लेकर उतर पड़ी । असबाब उतारा, परंतु जल्दी में ट्रंक उतारना भूल गयी । गाड़ी चल दी । दारोगा जी ने अपने मित्र को इस दशा में देखा तो वह भी उतर पड़े । समझ गये कि हजरत आज ज्यादा चढ़ा गये । देखा तो मुंशी जी की दशा बिगड़ गयी थी । ज्वर, पेट में दर्द, नसों में तनाव, कै और दस्त । बड़ा खटका हुआ । स्टेशन मास्टर ने यह हाल देखा तो समझे हैजा हो गया है । हुक्म दिया, रोगी को बाहर ले जाओ । विवश होकर लोग मुंशीजी को एक पेड़ के नीचे उठा ले गये । उनकी पत्नी रोने लगी । हकीम-डाक्टर की तलाश-हुई । पता लगा कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ से वहाँ एक छोटा-सा अस्पताल है । लोगों की जान में जान आयी । किसी से यह भी मालूम हुआ कि डाक्टर साहब बिल्हौर के रहने वाले हैं । ढाढ़स बँधा । दारोगा जी अस्पताल दौड़े । डाक्टर साहब से समाचार कह सुनाया और कहा– आप चलकर जरा उन्हें देख तो लीजिए ।

डाक्टर का नाम था चोखेलाल । कम्पौंडर थे, लोग आदर से डाक्टर कहा करते थे । सब वृत्तांत सुनकर रुखाई से बोले– सबेरे के समय मुझे बाहर जाने की आज्ञा नहीं है ।

दारोगा– तो क्या मुंशी जी को यहीं लावें ?

चोखेलाल– हाँ, आपका जी चाहे लाइए ।

दारोगा जी ने दौड़-धूप कर एक डोली का प्रबंध किया । मुंशीजी को लाद कर अस्पताल लाये । ज्योंही बरामदे में पैर रखा, चोखेलाल ने डाँट कर कहा– हैजे (विसूचिका) के रोगी को ऊपर लाने की आज्ञा नहीं है।

बैजनाथ अचेत तो थे नहीं, आवाज सुनी, पहचाना, धीरे से बोले– अरे यह तो बिल्हौर ही के हैं– भला-सा नाम है । तहसील में आया-जाया करते हैं । क्यों महाशय । मुझे पहचानते हैं ?

चीखेलाल– जी हाँ, खूब पहचानता हूँ ।

बैजनाथ– पहचान कर भी इतनी निठुरता । मेरी जान निकल रही है । जरा देखिए, मुझे क्या हो गया ?

चोखे– हाँ, यह सब कर दूँगा और मेरा काम ही क्या ? फीस ?

दारोगा जी– अस्पताल में कैसी फीस जनाबेमन ।

चोखे– वैसे ही जैसी इन मुंशीजी ने मुझसे वसूल की थी जनाबेमन ।

दारोगा जी– आप कहते हैं, मेरी समझ में नहीं आता ।

चोखे– मेरा घर बिल्हौर में है । वहाँ मेरी थोड़ी-सी जमीन है । साल में दो बार उसकी देखभाल को जाना पड़ता है । जब तहसील में लगान जमा करने जाता हूँ, मुंशी जी डाँटकर अपना हक वसूल कर लेते हैं । न दूँ तो शाम तक खड़ा रहना पड़े । स्याहा न हो । फिर जनाब कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर । मेरी फीस दस रुपये निकालिए । देखूँ, दवा दूँ तो अपनी राह लीजिए ।

दारोगा– दस रुपये !!

चोखे– जी हाँ, और यहाँ ठहरना चाहें तो दस रुपये रोज ।

दारोगा जी विवश हो गये । बैजनाथ की स्त्री से रुपये माँगे । तब उसे अपने बक्से की याद आयी । छाती पीट ली । दारोगा जी के पास भी अधिक रुपये नहीं थे, किसी तरह दस रुपये निकालकर चोखेलाल को दिये– उन्होंने दवा दी । दिन भर कुछ फायदा न हुआ । रात को दशा सँभली । दूसरे दिन फिर दवा की आवश्यकता हुई । मुंशियाइन का एक गहना जो २० रु० से कम का न था बाजार में बेचा गया । तब काम चला । शाम तक मुंशीजी चंगे हुए । रात को गाड़ी पर बैठकर खूब गालियाँ दीं ।

श्री अयोध्या जी में पहुँच कर स्थान की खोज हुई । पंडों के घर में जगह न थी । घर-घर में आदमी भरे हुए थे । सारी बस्ती छान मारी, पर कहीं ठिकाना न मिला । अंत में यह निश्चय हुआ कि किसी पेड़ के नीचे डेरा जमाना चाहिए । किन्तु जिस पेड़ के नीचे जाते थे वहीं यात्री पड़े मिलते । खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहने के सिवा और कोई उपाय न था । एक स्वच्छ स्थान देखकर बिस्तरे बिछाये और लेटे । इतने में बादल घिर आये । बूँदे गिरने लगीं । बिजली चमकने लगी । गरज से कान के परदे फटे जाते थे । लड़के रोते थे । स्त्रियों के कलेजे काँप रहे थे । अब यहाँ ठहरना दुस्सह था, पर जायें कहाँ ।

अकस्मात् एक मनुष्य नदी की तरफ से लालटेन लिए आता हुआ दिखायी दिया– वह निकट पहुँच गया तो पंडित जी ने उसे देखा । आकृति कुछ पहिचानी हुई मालूम हुई। किंतु यह विचार न आया कि कहाँ देखा है । पास जाकर बोले– क्यों भाई साहब, यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए जगह न मिलेगी ? वह मनुष्य रुक गया । पंडित जी की ओर ध्यान से देखकर बोला– आप पंडित चंद्रधर तो नहीं हैं ?

पंडित जी प्रसन्न होकर बोले– जी हाँ । आप मुझे कैसे जानते हैं ?

उस मनुष्य ने सादर पंडित जी के चरण छुए और बोला– मैं आपका पुराना शिष्य हूँ । मेरा नाम कृपाशंकर है । मेरे पिता कुछ दिनों बिल्हौर के डाक-मुंशी रहे थे । उन्हीं दिनों मैं आपकी सेवा में पढ़ता था ।

पंडित जी की स्मृति जागी, बोले– ओहो तुम्हीं हो कृपाशंकर ! तब तो तुम दुबले-पतले लड़के थे, कोई आठ-नौ साल हुए होंगे ।

कृपा– जी हाँ, नवाँ साल था । मैंने वहाँ से आकर इन्ट्रेस पास किया, अब यहाँ म्युनिसिपिल्टी में नौकर हूँ । कहिए आप तो अच्छी तरह रहे । सौभाग्य था कि आपके दर्शन हो गये ।

पंडित– मुझे भी तुमसे मिल कर बड़ा आनंद हुआ । तुम्हारे पिता अब कहाँ हैं ?

कृपा– उनका तो देहांत हो गया । माता साथ हैं । आप यहाँ कब आये ।

पंडित– आज ही आया हूँ । पंडों के घर में जगह न मिली । विवश होकर यहीं रात काटने की ठहरी ।

कृपा– बाल-बच्चे भी साथ हैं ?

पंडित– नहीं, मैं तो अकेले ही आया हूँ । पर मेरे साथ दारोगा जी और सियाहेनवीस साहब हैं– उनके बाल-बच्चे भी साथ हैं ।

कृपा– कुल कितने मनुष्य होंगे ?

पंडित जी– हैं तो दस, किन्तु थोड़ी-सी जगह में निर्वाह कर लेंगे ।

कृपा– नहीं साहब, बहुत-सी जगह लीजिए । मेरा बड़ा मकान खाली पड़ा है । चलिये, आराम से एक, दो, तीन दिन रहिये । मेरा परम सौभाग्य है कि आपकी कुछ सेवा करने का अवसर मिला ।

कृपाशंकर ने कई कुली बुलाये । असबाब उठवाया और सबको अपने मकान पर ले गया । साफ-सुथरा घर था । नौकर ने चटपट चारपाइयाँ बिछा दीं । घर में पूरियाँ पकने लगीं । कृपाशंकर हाथ बाँधे सेवक की भाँति दौड़ता था । हृदयोल्लास से उसका मुख-कमल चमक रहा था । उसकी विनय और नम्रता ने सबको मुग्ध कर लिया ।

और सब लोग तो खा-पीकर सोये । किंतु पंडित चंद्रधर को नींद नहीं आयी । उनकी विचार शक्ति इस यात्रा की घटनाओं का उल्लेख कर रही थी । रेलगाड़ी की रगड़-झगड़ और चिकित्सालय की नोच-खसोट के सम्मुख कृपाशंकर की सहायता और शालीनता प्रकाशमय दिखायी देती थी ।

पंडित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा ।

उन्हें आज इस पद की महानता ज्ञात हुई ।

यह लोग तीन दिन अयोध्या रहे । किसी बात का कष्ट न हुआ । कृपाशंकर ने उनके साथ जाकर प्रत्येक धाम का दर्शन कराया ।

तीसरे दिन जब लोग चलने लगे तो वह स्टेशन तक पहुँचाने आया । जब गाड़ी ने सीटी दी तो उसने सजल नेत्रों से पंडित जी के चरण छुए और बोला, कभी-कभी इस सेवक को याद करते रहिएगा ।

पंडित जी घर पहुँचे तो उनके स्वभाव में बड़ा परिवर्त्तन हो गया था । उन्होंने फिर किसी दूसरे विभाग में जाने की चेष्टा नहीं की ।

●

शब्दार्थ :

बोध – ज्ञान, जानकारी, तसल्ली । मुदर्रिसी – अध्यापक की नौकरी, शिक्षकता । जंजाल – झंझठ, बखेड़ा । मजूर – मजदूर । मुंशी – मुहरिर, कायस्थों की एक उपाधि । तहसील – तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी । सियाहेनवीस – सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला । सियाहा – आय-व्यय की बही अथवा रोजनामचा; सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है । खमीरा – कटहल या अन्य फल आदि का सड़ाव जो तम्बाकू में डाला जाता है । कबाब – सीखों पर भूना हुआ मांस । रोबदाब – बड़प्पन की धाक, दबदबा । बनिया – व्यापारी, आटा-दाल आदि बेचनेवाला । टका – अधन्ना, दो पैसे । ठाठ-बाट – आड़म्बर, सजधज, तड़क-भड़क । कुढ़ते – मन ही मन खीझते या चिढ़ते । कोसते – गालियाँ देते । निगरानी – देखरेख । आवारा – व्यर्थ इधर-उधर फेरनेवाला । अनुग्रहपूर्ण – दयापूर्वक । उनकी बदौलत– उनके कारण से । ऊसर – क्षारमृत्तिका या खारी जमीन; वह भूमि जिसमें रेह या लोनी मिट्टी अधिक होनेके कारण पानी बरसने पर भी घास तक नहीं जमती । मेले-ठेले – भीड़-भाड़ । असमंजस– दुविधा, भगदड़–सी– भागनेकी भांति । खुफिया – गुप्त, छिपा हुआ । फरोसी – बेचनेवाला । रियायत – छूट, नरमी । चालान – किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए न्यायालय में भेजा जाना । ढकेल देना– धक्के से गिरा देना । ठट्ठा मारकर हँसना – उपहास करना । दरोगा – थानेदार । जबान – जीभ । हटे-कट्टे– हृष्ट-पुष्ट । सन्दूक – पिटारा, बक्स । हेठी– तौहीन या मानहानि । रोब – बड़प्पन की धाक, दबदबा । वैर-दुश्मनी । तमाशा– वह दृश्य जिसके देखनेसे मनोरंजन हो । कचूमर निकालना – कुचलना या कूटना या पीटना । असबाब– वस्तु, सामान । उल्टी– वमन, कै । हजरत – महाशय, खोटा आदमी । नस – स्नायु । कै– उल्टी । दस्त– पतला पायखाना । खटका – भय, चिन्ता । हैजा – विशूचिका, दस्त और कै की बीमारी । हकीम– चिकित्सक । ढाढस– आश्वासन, तसल्ली, धैर्य । डोली– एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधों पर लेकर चलते हैं, पालकी, शिविका । बरामदा– दालान, बारजा ।

जनाब– महाशय, बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द । स्याहा – सरकारी खजानेका वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है, भूमिकर । चंगा – स्वस्थ । डेरा– पड़ाव, टिकान । चारपाई – खाट, खटिया । नोच-खसोट – झीना-झपटी । शालीनता – विनम्रता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर हमेशा क्यों पछताया करते थे ?

(ख) पण्डितजी क्यों कहा करते थे कि 'हम से तो मजूर ही भले ?

(ग) ठाकुर अतिबल सिंह और मुंशी बैजनाथ के लिए बाजार में कैसे अलग भाव था ?

(घ) ठाकुर साहब और मुंशीजी की कृपा के बदले में पण्डितजी को क्या करना पड़ता था ?

(ङ) अपनी दुरवस्था से निकलनेके लिए पण्डितजी ने क्या किया ?

(च) पण्डितजी पर अफसर लोग क्यों खुश थे ?

(छ) पहले मुसाफिर ने ठाकुर अतिबल सिंह को गाड़ी में क्यों नहीं बैठने दिया ?

(ज) ठाकुर साहब ने दूसरे मुसाफिर का क्या बिगाड़ा था ?

(झ) डाक्टर चोखेलाल मुंशी बैजनाथ से क्यों नाराज था ?

(ञ) पण्डित चन्द्रधर को नींद क्यों नहीं आयी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर ने कहाँ मुदर्रिसी की थी ?

(ख) पण्डित जी के पड़ोस में कौन-कौन रहते थे ?

(ग) सन्ध्या को कचहरी से आने पर मुंशी बैजनाथ क्या करते थे ?

(घ) ठाकुर साहब शाम को क्या करते थे ?

(ङ) दोनों महाशयों को आते-जाते देखकर बनिये क्या करते थे ?

(च) पण्डित जी अपने भाग्य को क्यों कोसते थे ?

(छ) मुंशी जी ने पण्डितजी को किसका ख्याल रखनेको कहा और क्यों ?

(ज) ऊसर की खेती किसे कहा गया है ?

(झ) पहले मुसाफिर पर ठाकुर साहब ने कौन-सा अपराध लगाया था और कितने रुपये लेकर वे टले थे ?

(ञ) दूसरे मुसाफिर ने ठाकुर साहब से नीचे बैठ जाने की बात करते हुए क्या कहा ?

(ट) कृपाशंकर ने बिल्हौर से कौन-सी परीक्षा पास की और अयोध्या में किस पद पर तैनात हुआ था ?

(ठ) पण्डित जी को किस बात का बोध हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

(क) 'बोध' कहानी किसने लिखी है ?

(ख) पण्डित चन्द्रधर ने अपर प्राइमरी में कौन-सी नौकरी की थी ?

(ग) कौन सदा पछताया करते थे कि कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे ?

(घ) महीने भर प्रतीक्षा करने के बाद पण्डित जी को कितने रुपये देखने को मिलते थे ?

(ङ) तहसील में सियाहेनवीस कौन था ?

(च) ठाकुर साहब आराम कुर्सी पर लेटकर क्या पीते थे ?

(छ) मुंशी जी को कौन-सा व्यसन था ?

(ज) अफसर लोग किस पर खुश थे ?

(झ) वेतन-वृद्धि को किसकी खेती कहा गया है ?

(ञ) कौन-से महीने में मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह अयोध्या की यात्रा के लिए निकले थे ?

(ट) दोनों महाशयों ने कितने सप्ताह की छुट्टी ली ?

(ठ) बिल्हौर से कितने बजे गाड़ी छूटती थी ?

(ड) डाक्टर चोखेलाल कहाँ के रहनेवाले थे ?

(ढ) किसकी विनय और नम्रता ने सब को मुग्ध कर लिया ?

(ण) शिक्षक का गौरव किसने समझा ?

(त) सभी लोग अयोध्या में कितने दिन रहे ?

4. निम्नलिखित अवतरणों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) हमसे तो मजूर ही भले ।

(ख) परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है ।

(ग) कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर ।

(घ) पण्डित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा ।

5. रिक्त स्थानों को भरिए :

(क) __________ पैसे की चीज टके में लाते ।

(ख) ईश्वर ने उन्हें इतनी __________ दे रखी थी ।

(ग) आपने आकर मेरा __________ निकाल दिया ।

(घ) दारोगा जी ने __________ कर एक डोली का प्रबन्ध किया ।

(ङ) मेरे पिता कुछ दिनों बिल्हौर के __________ रहे थे ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिये गये विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर को कितने रुपये मासिक वेतन मिलता था ?

(i) दस (ii) पचास (iii) पन्द्रह (iv) सौ ।

(ख) मुंशी बैजनाथ के कितने लड़के थे ?

(i) दो (ii) चार (iii) तीन (iv) पाँच

(ग) 'इसमें कौन-सी हेठी हुई जाती है'। यह वाक्य किसने कहा ?

(i) पहले मुसाफिर ने (ii) पण्डित चन्द्रधर ने

(iii) दूसरे मुसाफिर ने (iv) मुंशी बैजनाथ ने

(घ) 'आपके खून का प्यासा हूँ' का अर्थ है–

(i) खून पीना चाहता हूँ (ii) प्यास बुझाना चाहता हूँ

(iii) वध करना चाहता हूँ (iv) मार-पीट करना चाहता हूँ ।

(ङ) 'पण्डित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा' का आशय है–

(i) शिक्षकता का महत्त्व अधिक है ।

(ii) सबसे बड़ी नौकरी शिक्षक की है ।

(iii) दूसरी नौकरियों का कोई महत्त्व नहीं है ।

(iv) शिक्षक बननेमें वेतन अधिक मिलता है ।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(क) पण्डित चन्द्रधर ने, एक अपर प्राइमरी में मुदर्रिसी की थी ।

(ख) पण्डित जी के पड़ोस में दो महाशय और रहते थे ।

(ग) ठाकुर साहब शाम को आराम कुरसी पर लेट जाते थे ।

(घ) गाड़ी में जगह की बड़ी कमी थी ।

(ङ) ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे ।

(च) ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को वहाँ से निकालकर दूसरे कमरे में बैठाया ।

- पहले वाक्य में 'पण्डित चन्द्रधर ने', 'एक अपर प्राइमरी में', 'मुदर्रिसी';
- दूसरे वाक्य में 'पण्डितजी के', 'पड़ोस में';
- तीसरे वाक्य में 'ठाकुर साहब', 'शाम को', 'आराम कुरसी पर';
- चौथे वाक्य में 'गाड़ी में', 'जगह की';
- पांचवें वाक्य में 'ठाकुर साहब', 'क्रोध से';
- छठे वाक्य में 'ठाकुर साहब ने', 'बाल-बच्चों को', 'वहाँ से निकालकर', 'दूसरे कमरे में - आदि पद संज्ञा-शब्द के रूप हैं । इनका संबंध क्रमश: 'की थी', 'रहते थे', 'लेट जाते थे', बड़ी कमी थी', 'हो रहे थे', 'बैठाया' आदि क्रियाओं से सूचित हो रहा है । इसलिए ये शब्द कारक हैं।

याद रखिए– संज्ञा व सर्वनाम शब्दों का वाक्य के अन्य शब्दों से, क्रिया से संबंध बतानेवाले शब्द-रूपों को कारक कहते हैं ।

साथ-साथ विभक्ति या परसर्ग को भी जानिए–

ऊपर दिये गये वाक्यों में संज्ञाओं का क्रिया से संबंध बतानेके लिए कुछ चिह्नों जैसे– ने, में, के, को, पर, की, से आदि का प्रयोग किया गया है । इन चिह्नों को विभक्ति-चिह्न कहते हैं ।

याद रखिए– वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा को, कर्म, आदि में विभक्त करनेवाले या कारकों का रूप प्रकट करने के लिए प्रयोग में आनेवाले शब्द-चिह्नों को विभक्ति कहते हैं ।

संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के बाद अर्थात् अंत में जुड़नेके कारण विभक्ति को 'परसर्ग' भी कहा जाता है । कभी-कभी कुछ वाक्यों में कुछ शब्दों के साथ विभक्ति का प्रयोग नहीं होता ।

जैसे – 'ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे ।'

इस वाक्य में 'ठाकुर साहब' के बाद किसी विभक्ति या परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है । ऐसे वाक्यों में शब्द-क्रम या अर्थ के आधार पर क्रिया से संज्ञा का संबंध स्पष्ट होता है ।

2. विभक्ति-संबंधी अशुद्धियों पर ध्यान दीजिए :

- संज्ञा शब्द के साथ विभक्ति का प्रयोग होने पर इसे अलग लिखा जाता है ।

  जैसे– 'ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को दूसरे कमरे में बैठाया' ।

इस वाक्य में 'ठाकुर साहब', 'बाल-बच्चों' और 'कमरे' संज्ञा-शब्द हैं और इनके साथ प्रयुक्त क्रमशः 'ने', 'की' और 'में' आदि विभक्तियों का प्रयोग अलग हुआ है ।

- सर्वनाम के साथ विभक्ति का प्रयोग होने पर इसे मिलाकर लिखा जाता है

  जैसे– 'मैंने आपका क्या बिगाड़ा है' ?

इस वाक्य में 'मैं' और 'आप' सर्वनाम-शब्द हैं । इनके साथ प्रयुक्त क्रमशः 'ने' और 'का' प्रयोग मिलकर हुआ है ।

- वाक्य में 'ने' के प्रयोग पर ध्यान देना आवश्यक है ।

  जैसे– 'मैंने कुछ का कुछ लिख दिया है ।' ठीक है । पर यह कहना कि 'मैं कुछ का कुछ लिख दिया हूँ' गलत है ।

- कुछ जगह 'ने' के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है ।

  जैसे– 'सब लोग खा-पीकर सोये' । ठीक है ।

  पर यह कहना कि 'सब लोगों ने खा-पीकर सोये' गलत है ।

- कभी-कभी 'ने' के प्रयोग को सही नहीं माना जाता ।

  जैसे– 'उसने कटक जाना था' ।

  यहाँ 'ने' का प्रयोग गलत है ।

  अत: यह कहना ठीक होगा–

  'उसे कटक जाना था' ।

- वाक्य में 'को' विभक्ति के प्रयोग पर ध्यान दें–

  –वह अपने भाग्य को कोस रहा है । (सही)

  –वह अपना भाग्य कोस रहा है । (गलत)

  –पुस्तक लाओ । (सही)

  –पुस्तक को लाओ । (गलत)

  –सबको भगवान् की पूजा करनी चाहिए । (सही)

  –सबको भगवान को पूजना चाहिए । (गलत)

  –राम कहीं काम से गया है । (सही)

  –राम कहीं काम को गया है । (गलत)

- वाक्य में 'से' विभक्ति के सही प्रयोग को समझें –

  – राम देर से स्कूल जाता है । (सही)

  राम देर को स्कूल जाता है । (गलत)

  – इसी बहाने हम चले आये । (सही)

  इसी बहाने से हम चले आये । (गलत)

– सबको नमस्ते कहियेगा । (सही)

सबसे नमस्ते कहियेगा । (गलत)

– वह मुझ पर नाराज है । (सही)

वह मुझ से नाराज है । (गलत)

– सीता साइकिल से कॉलेज आती है । (सही)

सीता साइकिल में कॉलेज आती है । (गलत)

- **वाक्य में 'में' विभक्ति का प्रयोग देखें –**

– राम दिन में एक बार भी नही मिला । (सही)

राम दिन भर एक बार भी नहीं मिला । (गलत)

– कल रात पण्डित जी को नींद नहीं आयी । (सही)

कल रात में पण्डित जी को नींद नहीं आयी । (गलत)

– परस्पर सहयोग होना चाहिए । (सही)

परस्पर में सहयोग होना चाहिए । (गलत)

– पक्षी पेड़ पर बैठा है । (सही)

पक्षी पेड़ में बैठा है । (गलत)

अभ्यास कार्य

1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के कारक बताइए :

(क) खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहने के सिवा और कोई उपाय न था ।

(ख) मुझे भी तुमसे मिल कर बड़ा आनन्द हुआ ।

(ग) मेरा परम सौभाग्य है कि आपकी कुछ सेवा करने का अवसर मिला ।

(घ) रेलगाड़ी की रगड़-झगड़ और चिकित्सालय की नोच-खसोट के सम्मुख कृपाशंकर की सहायता और शालीनता प्रकाशमय दिखायी देती थी ।

2. निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थानों को उपयुक्त परसर्गों से पूरा कीजिए :

(क) अब तक हाथ _______ चार पैसे होते, आराम _______ जीवन व्यतीत होता ।

(ख) मैं _______ तुम्हारे साथ रियायत _______ थी ।

(ग) आपने _______ सूरत न देखी होगी, पर आपके डंड _______ देखी है ।

(घ) खुले मैदान ________, रेत _______ खड़े थे ।

3. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :–

पण्डित —	बुरा —
मौजूद —	अच्छा —
प्रभु —	विनम्र —
शालीन —	महान् —

4. रेखांकित पदों के संज्ञा- भेद लिखिए –

(क) जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिए ।

(ख) इन दोनों दुष्टों ने उनका असबाब फेंक दिया ।

(ग) प्रत्येक स्टेशन पर कोयला-पानी ले लेते थे ।

(घ) लोगों की जान में जान आयी ।

(ङ) कृपाशंकर ने पण्डित जी के चरण छुए ।

(च) मेले-ठेले में एक फालतू आदमी से बड़े काम निकलते हैं ।

5. रेखांकित पदों के कारक बताइए –

(क) मुसाफिर ने क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखा ।

(ख) दारोगा जी ने अपने मित्र की बुरी दशा देखी ।

(ग) वे लोग खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहे ।

(घ) कृपाशंकर ने कई कुली बुलाये ।

(ङ) वे लोग मुंशी जी को एक पेड़ के नीचे उठा ले गये ।

याद रखिए– कारक आठ प्रकार के होते हैं – कर्त्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक और संबोधन कारक ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से कारक छाँटिए और उनके नाम भी लिखिए : –

(i) मुंशी जी को शराब-कबाब का व्यसन था ।

(ii) माता ने बच्चे को सुलाया ।

(iii) ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे ।

(iv) लोग आदर से डाक्टर कहा करते थे ।

■■■